अध्याय 1: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 11 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1	प्रश्न-अभ्यास	10 प्रश्न
प्रश्नावली 1.2	रचना और अभिव्यक्ति — अवधी क्षेत्र	1 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

हल

परशुराम के क्रोध पर लक्ष्मण ने निम्नलिखित तर्क दिए—

1. लक्ष्मण ने कहा कि उन्होंने बचपन में अनेक धनुष तोड़े हैं, तब परशुराम ने कभी क्रोध नहीं किया। इस धनुष पर इतनी ममता क्यों?
('बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥')
2. लक्ष्मण ने कहा कि सभी धनुष एक समान हैं; राम ने इसे अनजाने में ('नयन के भोरें') देखा और छूने मात्र से यह टूट गया। इसमें राम का कोई दोष नहीं।
('सुनहु देव सब धनुष समाना। का छति लाभु जून धनु तोरें।'
'छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू।')
3. लक्ष्मण ने तर्क दिया कि यह धनुष पुराना ('जून') और जर्जर हो चुका था; टूटने में किसी का कोई लाभ-हानि नहीं।
4. लक्ष्मण ने व्यंग्य करते हुए कहा कि मुनि बिना कारण क्रोध कर रहे हैं।
('मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू।')

उत्तर: लक्ष्मण ने तर्क दिए — बचपन में अनेक धनुष तोड़े, तब क्रोध नहीं किया; सभी धनुष समान हैं; राम ने अनजाने में छुआ और यह जर्जर धनुष स्वयं टूट गया; राम का कोई दोष नहीं।

प्रश्न 2

परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

हल

राम का स्वभाव —

राम विनम्र, शांत और मर्यादाशील हैं। परशुराम के क्रोध पर वे विनयपूर्वक कहते हैं — 'नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥' वे स्वयं को परशुराम का सेवक बताते हैं और अपनी पहचान सरल शब्दों में देते हैं। वे लक्ष्मण को रोकते हैं और परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास करते हैं। राम का व्यवहार धैर्यशील और गुरुजनों के प्रति आदर से भरा है।

लक्ष्मण का स्वभाव —
लक्ष्मण वीर, साहसी और व्यंग्यशील हैं। वे परशुराम के क्रोधपूर्ण वचनों का उत्तर तीखे व्यंग्य से देते हैं। वे निर्भीकता से कहते हैं — 'इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥' लक्ष्मण को परशुराम की धमकियों से कोई भय नहीं होता। वे अपने कुल-मर्यादा की रक्षा करते हुए मुनि को सीधे उत्तर देते हैं।
सारांश — राम संयमी और विनयशील हैं, जबकि लक्ष्मण उग्र, निर्भीक और व्यंग्यपटु हैं।

उत्तर: राम विनम्र, शांत और मर्यादाशील हैं — परशुराम के क्रोध पर वे विनयपूर्वक उत्तर देते और स्वयं को सेवक कहते हैं। लक्ष्मण वीर, उग्र और व्यंग्यशील हैं — वे निर्भीकता से तीखे व्यंग्य से उत्तर देते हैं।

प्रश्न 3

लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

हल

यह प्रश्न रचनात्मक लेखन पर आधारित है। एक उदाहरण संवाद —
परशुराम (क्रोध से): रे नृपबालक! तू काल के वश होकर बोल रहा है, तुझे होश नहीं। यह धनुष त्रिपुरारि (शिव) का है, जो सारे संसार में प्रसिद्ध है। इसे साधारण धनुष मत समझो!
लक्ष्मण (हँसकर, व्यंग्य से): मुनिजी, हमें तो सब धनुष एक समान ही लगते हैं। यह पुराना धनुष था, छूने से टूट गया। इसमें किसका दोष? आप व्यर्थ ही क्रोधित हो रहे हैं।
परशुराम (और क्रोधित होकर): मैं बाल ब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। क्षत्रियों का विनाश करना मेरा स्वभाव है। मेरा फरसा देख, इससे मैंने सहस्रबाहु की भुजाएँ काटी हैं।
लक्ष्मण (निर्भयता से): मुनिजी! हमारे कुल में ब्राह्मण, गुरु, देव और गाय पर शस्त्र नहीं उठाया जाता। आपके शब्द वज्र के समान कठोर हैं — धनुष-बाण रखे रहने दीजिए, वे व्यर्थ हैं।

उत्तर: यह रचनात्मक प्रश्न है। लक्ष्मण-परशुराम संवाद में लक्ष्मण का वह अंश जहाँ वे व्यंग्य से परशुराम को उत्तर देते हैं ('कुम्हड़बतिया', 'फूँकि पहारू' आदि), विशेष प्रभावशाली है। उपर्युक्त आधार पर संवाद लिखें।

प्रश्न 4

परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए — बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही॥ भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥ सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥ मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर। गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥

हल

इस पद्यांश में परशुराम ने सभा में अपने बारे में निम्नलिखित बातें कहीं —
1. वे बाल ब्रह्मचारी हैं — जन्म से ही ब्रह्मचर्य का पालन करते आए हैं।
2. वे अत्यंत क्रोधी स्वभाव के हैं।
3. वे संसार में प्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल के विरोधी (द्रोही) हैं।
4. उन्होंने अपनी भुज-शक्ति से पृथ्वी को राजाओं से रहित कर दिया और बार-बार ब्राह्मणों को दान में दी।
5. उन्होंने सहस्रबाहु की भुजाएँ काटी थीं — इसलिए वे अत्यंत शक्तिशाली हैं।

6. उन्होंने अपना फरसा दिखाकर कहा कि यह गर्भ में पल रहे बच्चों को भी नष्ट कर सकता है — अर्थात यह अत्यंत घातक शस्त्र है।
7. उन्होंने लक्ष्मण को चेताया कि वे अपने माता-पिता को शोक में न डालें।

उत्तर: परशुराम ने कहा — वे बाल ब्रह्मचारी, अति क्रोधी, क्षत्रिय-कुल के द्रोही हैं; भुजबल से पृथ्वी को राजाहीन कर बार-बार ब्राह्मणों को दी; सहस्रबाहु की भुजाएँ काटीं; उनका फरसा गर्भस्थ शिशुओं को भी नष्ट करने में सक्षम है।

प्रश्न 5

लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?

हल

लक्ष्मण ने परशुराम को वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं —
1. वीर योद्धा शत्रु के सामने अपनी वीरता प्रदर्शित करता है, बार-बार कुठार (हथियार) दिखाकर धमकी नहीं देता।
('पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥')
2. वीर योद्धा रणभूमि में अपने शौर्य से पहचाना जाता है, केवल डींग हाँकने से नहीं।
वास्तविक वीर वह है जो युद्ध में पराक्रम दिखाए, न कि निर्बलों को धमकाए।
3. कोटि कुलिस के समान वचन कहना वीरता नहीं — वीर के शब्द कर्म से सिद्ध होते हैं।
('कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥')
4. वीर योद्धा ब्राह्मण, गुरु, गाय और हरिजनों पर शस्त्र नहीं उठाता — यह उसके कुल की मर्यादा है।

उत्तर: लक्ष्मण के अनुसार वीर योद्धा रणभूमि में पराक्रम दिखाता है, बार-बार हथियार दिखाकर धमकी नहीं देता; उसके वचन कर्म से सिद्ध होते हैं; वह निर्बलों को नहीं डराता।

प्रश्न 6

साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

हल

यह विचारपरक प्रश्न है। पाठ के आधार पर मत —
इस पाठ में राम और लक्ष्मण दोनों में साहस और शक्ति है, किंतु दोनों की अभिव्यक्ति भिन्न है।
राम साहसी होते हुए भी विनम्र रहते हैं — वे परशुराम को 'नाथ' कहकर सम्बोधित करते हैं और विनयपूर्वक उत्तर देते हैं। इससे संकट शांत होता है और मर्यादा बनी रहती है।
लक्ष्मण साहसी हैं किंतु अभिमानी भी — उनके व्यंग्य से स्थिति और बिगड़ती है।
जीवन में केवल शक्ति से काम नहीं चलता — विनम्रता से व्यक्ति दूसरों का सम्मान जीतता है, संबंध बनाता है और समस्याओं को बिना संघर्ष के सुलझाता है।
इसलिए साहस और शक्ति के साथ-साथ विनम्रता का होना व्यक्तित्व को सर्वश्रेष्ठ बनाता है।

उत्तर: साहस-शक्ति के साथ विनम्रता हो तो व्यक्ति दूसरों का सम्मान जीतता है, जैसे राम ने परशुराम के क्रोध को विनम्रता से शांत किया। केवल शक्ति से संघर्ष बढ़ता है; विनम्रता से समस्याएँ सुलझती हैं।

प्रश्न 7

भाव स्पष्ट कीजिए — (क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥ पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥ (ख) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥ देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥

हल

(क) भाव —

लक्ष्मण हँसकर कोमल वाणी में (जो वास्तव में तीखा व्यंग्य है) कहते हैं — 'अरे! मुनिराज तो महान योद्धा और मानी (अभिमानी) हैं! वे बार-बार मुझे अपना कुठार (फरसा) दिखा रहे हैं — मानो फूँककर पहाड़ उड़ाना चाहते हों।'

व्यंग्यार्थ — लक्ष्मण कहते हैं कि परशुराम हथियार दिखाकर डरा तो रहे हैं, किंतु यह उनकी सच्ची वीरता नहीं — ठीक वैसे जैसे कोई फूँककर पहाड़ उड़ाने की व्यर्थ कोशिश करे।

(ख) भाव —

लक्ष्मण कहते हैं — 'यहाँ कोई कुम्हड़बतिया (अत्यंत कमजोर, जो तर्जनी उँगली दिखाने भर से मर जाए) नहीं है। मैंने कुठार, धनुष और बाण देखकर भी अभिमान-सहित कुछ कहा।'

भाव — लक्ष्मण परशुराम को स्पष्ट कर देते हैं कि वे उनकी धमकियों से नहीं डरते। वे वीर क्षत्रिय हैं, कमजोर नहीं। उनका कथन निर्भयता और वीरोचित गर्व का प्रतीक है।

उत्तर: (क) लक्ष्मण व्यंग्यपूर्वक कहते हैं — परशुराम बार-बार फरसा दिखाते हैं, मानो फूँककर पहाड़ उड़ाना चाहते हों — यह दिखावटी वीरता है। (ख) लक्ष्मण कहते हैं — हम कमजोर नहीं जो उँगली दिखाने से डरें; हमने हथियार देखकर भी अभिमानपूर्वक उत्तर दिया।

प्रश्न 8

पाठ के आधार पर तुलसी के भाषा सौंदर्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

हल

तुलसी के भाषा सौंदर्य की विशेषताएँ —

1. अवधी भाषा का सरस और प्रवाहमयी प्रयोग — इस पाठ में अवधी भाषा का सुंदर उपयोग किया गया है जो सरल होते हुए भी भावपूर्ण है।
2. चौपाई और दोहा छंद — तुलसी ने चौपाई में प्रसंग वर्णन और दोहे में सार या व्यंग्योक्ति को व्यक्त किया है।
3. व्यंग्योक्ति की सरसता — लक्ष्मण के व्यंग्य ('फूँकि पहारू', 'कुम्हड़बतिया') में व्यंग्यभाषा का बेजोड़ सौंदर्य है।
4. अनुप्रास अलंकार — 'बालकु बोलि बधौं' में ब की पुनरावृत्ति ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न करती है।
5. उपमा अलंकार — 'कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा' में उपमा का सुंदर प्रयोग है।
6. वीर रस — लक्ष्मण के वचनों में वीर रस का स्वाभाविक परिपाक दर्शनीय है।
7. चरित्र-चित्रण — भाषा के माध्यम से राम का संयम और लक्ष्मण का उत्साह स्पष्ट झलकता है।
8. संगीतात्मकता — चौपाई का लय और दोहे की लाक्षणिकता पाठ को गेय बनाती है।
9. लोक-भाषा — 'लरिकाईं', 'जून धनु', 'नृपबालक' जैसे शब्द लोक-भाषा की जीवंतता दर्शाते हैं।

10. भाव-प्रवणता — भाषा इतनी सजीव है कि पात्रों का क्रोध, व्यंग्य और विनय आँखों के सामने चित्रित हो जाता है।

उत्तर: तुलसी की भाषा में अवधी का प्रवाह, चौपाई-दोहे की संगीतात्मकता, व्यंग्योक्ति, अनुप्रास-उपमा जैसे अलंकार, वीर रस, और लोकभाषा की जीवंतता — ये सब मिलकर पाठ को काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से उत्कृष्ट बनाते हैं।

प्रश्न 9

इस पूरे प्रसंग में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है। उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

हल

इस प्रसंग में लक्ष्मण के वचनों में व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य प्रकट होता है। प्रमुख उदाहरण —

1. 'बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥' — लक्ष्मण हँसकर 'मृदु वाणी' में परशुराम को 'महान योद्धा' कहते हैं, किंतु यह स्तुति नहीं, व्यंग्य है।
2. 'पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥' — बार-बार हथियार दिखाने की तुलना 'फूँककर पहाड़ उड़ाने' से — अर्थात यह व्यर्थ दिखावा है।
3. 'इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥' — लक्ष्मण व्यंग्य से कहते हैं कि यहाँ कोई इतना कमजोर नहीं जो उँगली दिखाने से डर जाए।
4. 'कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा॥' — 'आपके शब्द तो वज्र के समान हैं, फिर धनुष-बाण और फरसा क्यों रखते हैं?' — यह तीखा व्यंग्य है।

इस प्रकार लक्ष्मण विनम्र-सी वाणी में अत्यंत तीखे व्यंग्य-बाण चलाते हैं जो परशुराम के क्रोध को और भड़काते हैं। यह व्यंजना शैली इस प्रसंग को अनूठा बनाती है।

उत्तर: प्रसंग में लक्ष्मण के व्यंग्य का अनूठा सौंदर्य है — 'फूँकि पहारू', 'कुम्हड़बतिया', 'ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा' जैसे उदाहरणों में वे मृदु वाणी में तीखे व्यंग्य-बाण चलाते हैं।

प्रश्न 10

निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार पहचान कर लिखिए — (क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही। (ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा।

हल

(क) बालकु बोलि बधौं नहि तोही —
अलंकार: अनुप्रास अलंकार।
कारण: इस पंक्ति में 'ब' वर्ण की बार-बार आवृत्ति हुई है — 'बालकु', 'बोलि', 'बधौं', 'ब' — इससे ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न होता है।

(ख) कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा —
अलंकार: उपमा अलंकार।

कारण: यहाँ परशुराम के वचन (बचनु) की तुलना करोड़ वज्रों (कोटि कुलिस) से की गई है। 'सम' उपमावाचक शब्द है। उपमेय = बचनु, उपमान = कोटि कुलिस, वाचक = सम, साधारण धर्म = कठोरता।

उत्तर: (क) अनुप्रास अलंकार — 'ब' वर्ण की आवृत्ति। (ख) उपमा अलंकार — वचन की तुलना करोड़ वज्रों से; 'सम' उपमावाचक शब्द है।

प्रश्नावली 1.2 — रचना और अभिव्यक्ति — अवधी क्षेत्र

प्रश्न 15

अवधी भाषा आज किन-किन क्षेत्रों में बोली जाती है?

हल

अवधी भाषा मुख्यतः उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में बोली जाती है।

प्रमुख क्षेत्र —

1. उत्तर प्रदेश — लखनऊ, फ़ैज़ाबाद (अयोध्या), बाराबंकी, सुल्तानपुर, रायबरेली, प्रतापगढ़, अंबेडकरनगर, गोंडा, बहराइच, श्रावस्ती, बस्ती, उन्नाव आदि जिले।
2. बिहार — बिहार के कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में भी अवधी का प्रभाव है।
3. नेपाल — नेपाल की तराई में (मधेसी समुदाय में) अवधी का व्यापक प्रयोग होता है।
4. उत्तर प्रदेश और बिहार से पलायन कर बसे लोगों के माध्यम से मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गयाना, ट्रिनिडाड और कैरेबियाई देशों में भी अवधी बोली जाती है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना अवधी में की, जिससे यह भाषा साहित्यिक और धार्मिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

उत्तर: अवधी मुख्यतः उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र (लखनऊ, अयोध्या, बाराबंकी, सुल्तानपुर, रायबरेली आदि), नेपाल की तराई, तथा मॉरिशस-फिजी-सूरीनाम जैसे प्रवासी भारतीय समुदायों में बोली जाती है।